International Journal of Multidisciplinary Research and Development

Volume: 2, Issue: 7, 524-526
July 2015
www.allsubjectjournal.com
e-ISSN: 2349-4182
p-ISSN: 2349-5979
Impact Factor: 3.762

**षिवगोपाल तिवारी**
प्रवक्ता इतिहास विभाग
सीताराम समर्पण महाविद्यालय
नरैनी (बाँदा)

**रमाकान्त द्विवेदी**
प्रवक्ता भूगोल विभाग
सीताराम समर्पण महाविद्यालय
नरैनी (बाँदा)

**Correspondence:**
**षिवगोपाल तिवारी**
प्रवक्ता इतिहास विभाग
सीताराम समर्पण महाविद्यालय
नरैनी (बाँदा)

# अद्भुत आतुल्य कालिंजरः ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं पर्यटक स्थलों का भौगोलिक अध्ययन

**षिवगोपाल तिवारी, रमाकान्त द्विवेदी**

**शोध सारांष**
''किसी देष के प्राण उसकी संस्कृति औ इतिहास में बसते हैं, संस्कृति और इतिहास के नष्ट होने से राष्ट् भी निर्जीव और उर्जा विहीन हो जाता है।'' हम उन जीर्ण–षीर्ण दुर्गो व स्थलों को देख कर उस समय की जीवंत घटनाओं को उकेरने का प्रयास करते हैं, जिससे हमें उस समय की स्थापत्य कला, जीवंत घटनाओं, कला, शाहषी वीरों के दाव पेंच, युद्ध कौषल कला, प्रकृति के सुरम्य स्थलों का चयन, राजनीतिक कूटनीतिक एवं सामाजिक संरचना आदि घटनाओं की खोज का ऑकलन करना है इन्हीं की खोज में शोधार्थी का विषय कालिंजर परिक्षेत्र में ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं पर्यटन स्थलों का अध्ययन सम्मलित है।

**प्रस्तावना**
भारत एक प्राचीन देष है जहॉ का इतिहास वीर और साहसी वीर–वीरांगनाओं तथा प्रबुद्ध जनों एवं राजनितिज्ञों द्वारा रचित है, जो अपनी सांस्कृतिक और राजनीतिक परम्परायें समेंटे हुए हैं। भारत का वर्तमान संघीय स्वरूप प्राप्त करने में हजारों वर्षों का समय लगा है, इस दौरान उनके राज्यवंषों एवं राज्यों का उद्भव एवं विकास हुआ, किन्तुं ये दुर्ग अपने पतन के बाद भी अपनी संस्कृति किसी न किसी रूप में संरक्षित किये हैं। हम इन घटनाओं से भारत ही नहीं बल्कि विष्व के अन्य देषों की जड़ तक पहुॅच पाते हैं और वहॉ कि भौतिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक, सामाजिक एवं आर्थिक पक्षों को भी जान पाते हैं। अध्ययन क्षेत्र में भारत के समान वीरों एवं वीरांगनाओं का क्षेत्र रहा है। अध्ययन क्षेत्र बुन्देलखण्ड़ का भाग होने के कारण यह भूमि वीरो की भूमि के नाम से जाना जाता है साथ ही साथ यह विन्ध्य श्रेणियों की माला का क्षेत्र है जिस कारण यहॉ प्रकृति के सुरम्य स्थलों ने इस क्षेत्र को अद्भुत बना दिया है।

**कालिंजर परिक्षेत्र का भौगोलिक परिचय–** नरैनी का भू–पत्रक संख्या N0. 63 C/3, 63 C/11 और 63 C/12 पर आधारित है। यह भाग बुन्देलखण्ड़ क्षेत्र जो विष्व भू–पटल पर कर्क रेखा के उत्तर $24^0$ . 00' उत्तरी अक्षांष तथा $80^0$ . 30' पूर्वीदेषांतर के मध्य विस्तृत है। जिसका भौगोलिक क्षेत्रफल 54,560 वर्गकिलोमीटर है। वहीं नरैनी बुन्देलखण्ड़ के बॉदा जनपद की एक ग्रामीण तहसील एवं विकासखण्ड़ के अन्तर्गत आता है। जिसका भौगोलिक विस्तार $25^0$ . 15' उत्तरी अक्षांष तथा $80^0$ . 35' पूर्वीदेषांतर पर स्थित है, तथा समुद्र तल से 180 मीटर उॅचाई पर बसा है। जिसका क्षेत्रफल 818,94 वर्गकिलोमीटर जो जनपद के 20.14 प्रतिषत भाग पर विस्तृत है। मानचित्र में बुन्देलखण्ड़ प्रदेष में जनपद बॉदा और विकासखण्ड़ नरैनी में कालिंजर कि स्थिति चित्र संख्या 01 में दर्षित है।

**कालिंजर की सापेक्ष स्थिति–** कालिंजर के उत्तर विकासखण्ड़ नरैनी जो राजमार्ग संख्या 19 में 22 किलोमीटर और जनपद मुख्यालय बॉदा से 56 किलोमिटर तथा उत्तर में सतना जनपद 72 किलामीटर, पूर्व में पन्ना 89 किलोमीटर, तथा छतरपुर 115 किलोमीटर और पष्चिम में फतेगंज 35 किलोमीटर तथा चित्रकूट धाम, 65 किलोमीटर दूर स्थित हैं।

**नामकरण–** कालिंजर अपने इतिहास के अधिकांष समय से देव गृह के रूप सुविख्यात हुआ। पद्म पुराण के अनुसार–

**अर्ध योजन विस्तीर्ण सुक्षेत्रं मम मन्दिरम।**
**कालिंजरेति विख्यातं मुक्तिदं षिव सन्नि द्यौ।।**

अर्थात शंकर जी ने पार्वती से कहा कि उस सुन्दर क्षेत्र में मेरा स्थान है, जो आधा योजन विस्त्रीण अर्थात 4 मील में फैला है, जो कालिंजर नाम से विख्यात है, और मेरे समीपस्थ रहने वाले निवासियों को मैं मुक्ति देन वाला हूॅ। उपरोक्त सूक्ति से इस भूमि कि ऐतिहासिकता एवं संस्कृति का पता चलता

है कि उक्त क्षेत्र ऋषि–मुनियों से पोषित भूमि रही होगी और यहॉ पर आने वाले श्रद्धालु अपने पापों को हरण करने आते रहे होगे। अर्थात यह क्षेत्र देव गृह रहा है साथ ही साथ यह क्षेत्र यह भी बताता है कि यह क्षेत्र वनाच्क्षादित रहा होगा, जो अपनी अद्भुत बनावट के लिए विख्यात हुआ। प्रस्तुत शोध प्रपत्र कालिंजर की ऐतिहासिक, सांस्कृति भव्यता की खोज है।
पद्म पुराण के अनुसार–

**सद्युगे कीर्तिको नाम त्रेतायां च महद्गिरि।**
**द्वापरे पिंगले नाम कलौ कलिंजरो गिरि।।**

अर्थात सतयुग में इसका नाम कीर्तक था, त्रेता में महद्गिरि, द्वापार में पिंगल एवं कलियुग में कालिंजर पर्वत के नाम से जाना गया।

**एतिहासिक स्वरूप–**कालिंजर का उद्भव एवं भू–विकास अत्यन्त प्राचीन है। पूर्व शोध कार्यों, स्थानीय सूचनाओं, कल्पनाओं, मान्यताओं एवं जनश्रुतियों के आधार पर इसके विकास काल का क्रम वेद, पुराणों एवं महाकाव्य काल से ही मिलता चला आ रह है। यह क्षेत्र वनाच्छादित क्षेत्र रहा है, महाभारत काल में नरैनी समीपस्थ शुक्तिमती नगरी के परिक्षेत्र के भूभाग के अन्तर्गत था। तत्पष्चात भारत में मुस्लिम शासकों के आगमन से पहले यह 'चेंदी देष' या 'दाहाल देष' का भूभाग था। मुस्लिम ऐतिहासिक ग्रन्थों में इस क्षेत्र को 'भट देष' या 'भट–गोंड देष' कहा गया। सम्राट अकबर के समय में इस क्षेत्र का कुछ भाग भट गोंड जों कालिंजर तक फैला था। बुन्देलखण्ड़ के परिसीमन में झांसी के बाद दूसरा ऐतिहासिक दुर्ग कालिंजर रहा है, यह बुन्देलखण्ड़ के महत्वपूर्ण दुर्गों में से एक है। मुस्लिम इतिहासकार फरिस्ता के अनुसार इसका निर्माण सातवीं शताब्दी में हुआ जो चंदेलों के उत्कर्ष में आने के पूर्व यह कन्नौज के प्रतिहारों और त्रिपुरी मध्य प्रदेष कल्चरि शासकों तथा दक्षिण के राष्ट्रकुल शासकों के अन्दर रहा। सर्वप्रथम चंदेल शासक यषोबरमन ;925–950द्ध कन्नौज के देवपाल को हरा कर प्राप्त किया। यह सन् 954 के खजुराहो लेख से विदित है कि फिर चंदेल शासक महाराजा धंग ;950 से 1002 ई0द्ध तथा महराजा गंड़ ;1002–1025द्ध शासन में महमूद गजनवी ने सन् 1022 में आक्रमण किया किन्तु अन्त में भेंटों के अदान प्रदान की सन्धि से मैत्री हो गयी। सन् 1182 में पृथ्वीराज चौहान ने विजय प्राप्त की और सन्धि के अनुसार परमार्द कालिंजरराधिपति बने। 1183 में पुनः परमार्द का महोबा में शासन स्थापित हो गया। इसके बाद कालिंजर में तो आक्रमण कारियों का सिलसिला चलता रहा। सन् 1530–31 में हूमायूँ ने एक साल तक असफल आक्रमण किये। सन् 1554 में शेरषाह शूरी ने इस दुर्ग को फतह कर लिया, जिस समय भारतीय चन्द्र बुन्देला ने किर्तिदेव की मदद करने के लिए भाई मधुकरषाह को भेजा किन्तु देर हो चुकी थी मधुकरषाह दुर्ग के बाहर से गोला बारी शुरूकर दी सेना को रसद बॉट रहे व गोला बारूद दे रहे शेरषाह शूरी की मैगजीन में एक गोला लगने से उसमें आग लगी जिससे शेरषाह शूरी मारा गया। तब शेरषाह का पुत्र सलीम शाह ने कीर्तिषाह का कत्ल कर दिया।[1]
शेरषाह के पष्चात अकबर ने सन् 1564 में आक्रमण कर कालिंजर में अधिकार किया यह शासन औरंगजेब के शासन तक चला। बुन्देला नरेष महाराजा छत्रषाल ने पुनः सन् 1679 में करम इलाही से जीत कर मुगल शासन से मुक्त कराया, और पण्ड़ित राम कृष्ण चौबे को किलेदारी दे दी। राम कृष्ण के सात पुत्र थे जिनमें कालिंजर क्षेत्र का राज्य विभाजित कर दिया जो आगे चलकर अंग्रेजों के जाल में एक–एक कर फंसते चले गये।
सन् 1800 में नवाब अली बहादुर द्वितीय तथा हिम्मत गिरि गोसाईं की सयुक्त सेना ने कालिंजर पर आक्रमण करदिया, और सन् 1802 में किले में ही अली बहादुर की मृत्यु हो गयी। तत्पष्चात अंग्रेज शासन के अधीन आ गया।

**सांस्कृतिक महत्व–** अध्ययन क्षेत्र एक सांस्कृतिक इकाई होते हुए भी मानव संस्कृति का उत्कर्ष क्षेत्र न बन सका इसका कारण वनाच्छादन का होना रहा, वनाच्क्षादन के सन्दर्भ में बताते चले कि यह क्षेत्र निविड़ के नाम का विषाल आरण्य था साथ–साथ पारस्परिक युद्धों से मानव संस्कृति र्जजर होती रही। यहॉ के शासक अपने शासन कौषल में धूर्त एवं असावधान रहे। जिस कारण यहॉ पर संस्कृति का विकास तो अल्प हुआ है लेकिन स्थापत्य कला का अद्भुद चित्रांकन देखने को मिलता है। यह क्षेत्र अत्यन्त ग्रामीण एवं बुन्देलखण्ड़ के अर्न्तगत होन के कारण यहॉ बुन्देली ग्रामीण संस्कृति देखने को मिलती है। देष के आजादी के बाद भी क्षेत्र अल्प विकास की ओर उन्मुख खड़ा है।

**पर्यटन क्षेत्र–** पर्यटन वे स्थल हैं जो मानव को अर्ष्यचकित कर देते हैं। पर्यटन मानव एवं प्रकृति निर्मित होते है। कालिंजर एक अद्भुत पर्यटन लिए हुए है, यह क्षेत्र विष्व की आष्चर्यचकित कर देने वालों में से एक है। यहॉ की मृगधारा ताजहमल के आष्चर्य से कम नहीं है, इसके साथ–साथ यहॉ पातालगंगा, नीलकठे मन्दिर, कोडस, झूरापहाड़, मरियादेव, भुइधारा, सुरंगघाटी, आमघाटी, पनघट, भवानीपुर की अरी, सरबन बाबा की भूमठी, पुतेरिया पाटी, लकसेहाअरी, राय का रपटा, जवारिन अरी आदि प्रमुख्य आकर्षक केन्द्र हैं, पर्यटकों को अपनी ओर आकृष्ट करते हैं।

**उद्देष्य–** प्रस्तुत शोध प्रपत्र का मुख्य उद्देष्य स्थानीय संस्कृति की खोज है। जिसमें धर्म, सामाजिक जीवन, भाषा, आर्थिक जीवन, व्यापार एवं वाणिज्य की खोज है।

**अध्ययन के स्रोत–** धार्मिक कक्षाओं के रूप में इतिहास दिखाई देता है, शासन एवं वंषीय प्रलेखों के रूप में इतिहास के दर्षन होते है, जीवन चरित्रात्मक के दर्षन होते हैं, कहानियों के रूप में हम इतिहास को सुनते हैं।

**निष्कर्ष–** उपरोक्त अध्ययन से पता चलता है कि यह क्षेत्र प्रकृति के अनुपम उपहार विन्ध्य पर्वत श्रंखला के उत्तरीय हिस्से में फैले एक कालिंजर पहाड़ी पर स्थित दुर्ग के निर्माणा वर्ष तथा निर्माणकर्ता आज भी विवादित बना हुआ है। जिसका सम्बन्ध मौर्य काल से गुप्त काल के सम्राटों में कहीं न कहीं निहित है। इस में सर्वाधिक सम्भावना चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य के नाम पर की जाती है। इसके बाद निरन्तर चंदेल शासकों ने इसका विकास एवं दुर्गी करण किया होगा। यह दुर्ग पहाडी में स्थित होने के कारण एवं प्रकृति उपहार स्वरूप प्राचीर रक्षात्मक होने के कारण मुस्लिम आक्रमणकारियों ने इसे जीतने का असफल प्रयास किया।
सांस्कृकति एवं धार्मिक दृष्टि से यह सतयुग, त्रेता युग, द्वापर युग इसका उल्लेख मिलता है। भौगोलिक दृष्टि से भी कालिंजर एक महत्वपूर्ण स्थल है यहॉ पर विद्यमान मिलने वनस्पति चिकित्सीय पद्धति के लिए औषध के रूप में उपयोगी हैं। इस लिए इनका संरक्षण मिलना आवष्यक है आपितु विभिन्न प्रकार की वनस्पति प्रजातियॉ यहां के पर्यावरण के लिए महत्पूर्ण हैं, जो जलवायु परिवर्तन को रोकने में सहायक सिद्ध हो सकती हैं।
पर्यटन के क्षेत्र में यह दुर्ग अति महत्पूर्ण प्रतीत होता है। शासन द्वारा यहॉ यदि यातयात के मार्ग स्थल तथा वायु एवं रेल मार्ग का विकास कर दिया जाये तो विदेषी पर्यटको के के आगमन के लिए सुगम हो जायेगा जिसके कारण यहॉ का स्थानीय विकास, औद्योगिक गतिविधियों एवं व्यापारिक क्रिया कलाप से रोजगार के विभिन्न अवसर स्थानीय बेरोजगार युवकों को प्रदान होगें, फलस्वरूप उनका व्यक्तिगत आर्थिक विकास होने से देष के आर्थिक विकास में सहायक सिद्ध होगें।
अन्ततः अद्भुत एवं अतुल्य कालिंजर दुर्ग एवं नगर वास्तव में ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, भौगोलिक, एवं धार्मिक व पर्यटन की दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थल है। परन्तु इस क्षेत्र में शासन की उपेक्षा के कारण अल्प विकास होने से यहॉ की सांस्कृतिक विरासत को क्षति

हो रही है। इसके विकास हेतु परिरक्षण एवं संरक्षण शासन द्वारा किया जाना अत्यावष्यक है।जिसके सहयोग से इस दुर्ग की सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, धार्मिक अविस्मृत विरासत समाज के लिए लाभ प्रद सिद्ध होगीं।

## संदर्भ ग्रन्थ सूची


1. इलियट डाउसन जिल्द 4 पृष्ठ 407
2. पद्म पुराण
3. डॉ0 थापक कमलेष चित्रकूट एवं बुन्देलखण्ड का पर्यटन
4. कालिंजर महात्म
5. जिला संख्यिकी पत्रिका
6. डॉ0 गुप्त मोहन लाल बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त इतिहास और सिक्के
7. डॉ0 त्रिपाठी वासुदेव वीरो का गढ कालिंजर
8. डॉ0 वर्मा हरिष्चन्द्र मध्य कालीन भारत भाग एक एवं दो
9. डॉ0 शर्मा एल0 पी0 मध्य कालीन भारतीय इतिहास एवं प्राचीन इतिहास
10. डॉ0 स्मिथ वी0 ए0 इयरली हिस्ट्री ऑफ इण्डिया